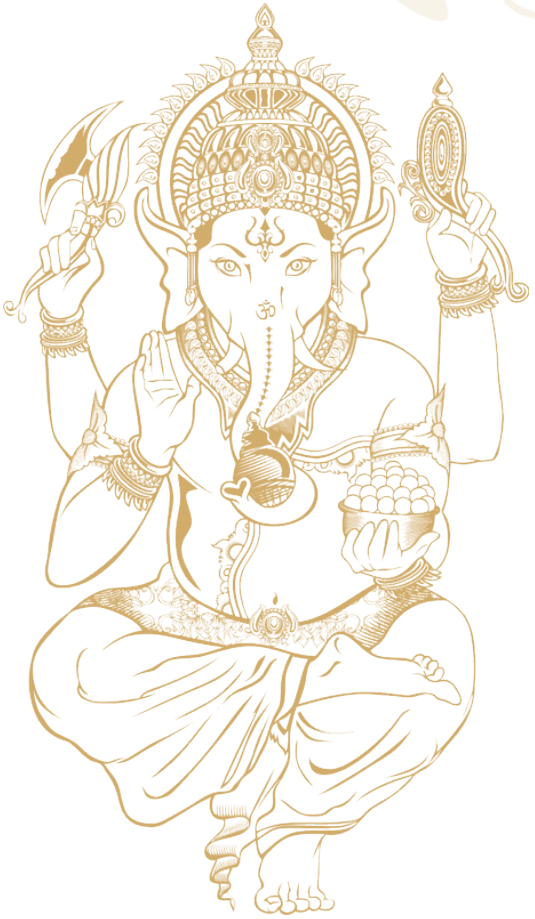

Mr. Sudhanshu Singh

24 Aug 1986

01:05 PM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120307501**

तिथि 24/08/1986 **समय** 13:05:00 **वार** रविवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:40:08
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	11:25:42 घं
वेलान्तर	00:02:28 घं
सूर्योदय	05:24:50 घं
सूर्यास्त	18:16:31 घं
चैत्रादि संवत	2043
शक संवत	1908
मास	भाद्रपद
पक्ष	कृष्ण
तिथि	5
नक्षत्र	अश्विनी
योग	गण्ड
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चू-चूड़ामणि
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	सूर्य
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

केतु 5वर्ष 3मा 24दि

चन्द्र

17/12/2017
18/12/2027

चन्द्र	18/10/2018
मंगल	19/05/2019
राहु	17/11/2020
गुरु	19/03/2022
शनि	18/10/2023
बुध	19/03/2025
केतु	18/10/2025
शुक्र	18/06/2027
सूर्य	18/12/2027

योगिनी

भ्रामरी 3वर्ष 0मा 13दि

भद्रिका

07/09/2025
07/09/2030

भद्रिका	18/05/2026
उल्का	19/03/2027
सिद्धा	08/03/2028
संकटा	18/04/2029
मंगला	07/06/2029
पिंगला	17/09/2029
धान्या	16/02/2030
भ्रामरी	07/09/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:46:42	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	---	0:00			
सूर्य			07:10:50	सिंह	मघा	3	केतु	राहु	मूलत्रिकोण	2.37	ज्ञाति	पितृ	जन्म
चंद्र			03:12:23	मेष	अश्विनी	1	केतु	सूर्य	सम राशि	0.83	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			18:44:09	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	मित्र राशि	1.07	मातृ	भ्रातृ	सम्पत
बुध			24:59:26	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	राहु	शत्रु राशि	0.96	अमात्य	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		26:26:21	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	केतु	सम राशि	1.16	आत्मा	धन	वध
शुक्र			23:12:05	कन्या	हस्त	4	चंद्र	सूर्य	नीच राशि	1.26	भ्रातृ	कलत्र	क्षेम
शनि			09:37:54	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	शत्रु राशि	1.08	पुत्र	आयु	मित्र
राहु			28:22:00	मीन	रेवती	4	बुध	शनि	सम राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु			28:22:00	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

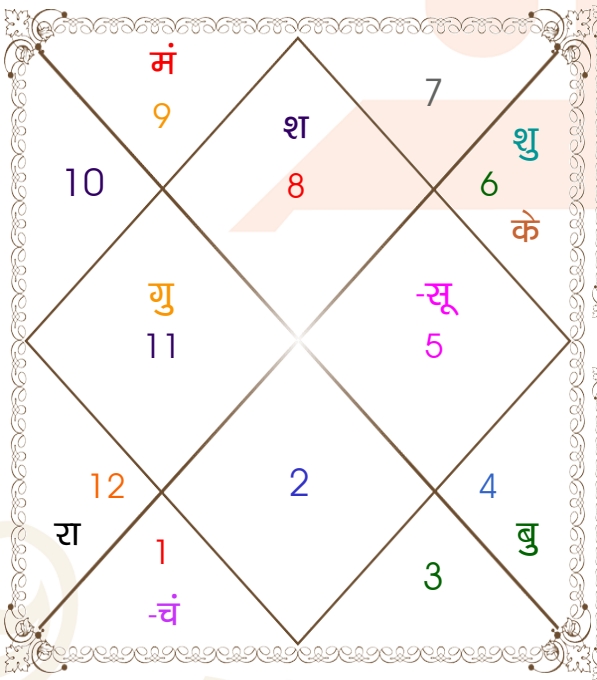

चन्द्र कुंडली

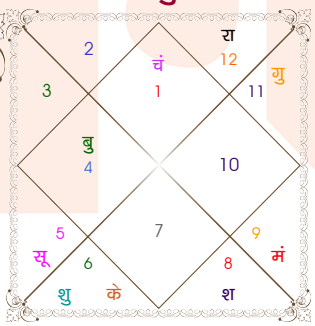

नवमांश कुंडली

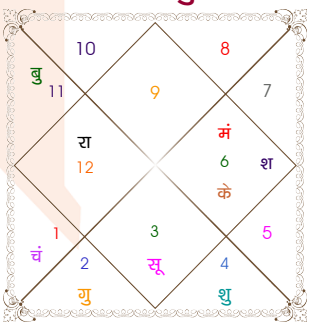

सर्वाष्टकवर्ग

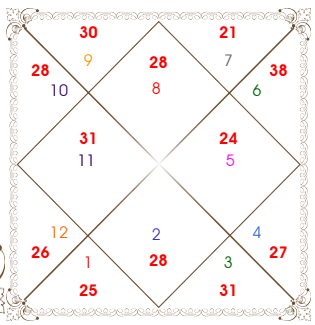

दशमांश कुंडली

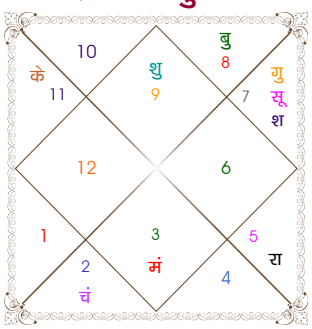

नक्षत्रफल

आपका जन्म अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि अश्व, गण देव, नाड़ी आद्य, वर्ण क्षत्रिय तथा वर्ग सिँह होगा। अश्विनी के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आपका जन्म नाम चु या चू अक्षर से प्रारम्भ होगा यथा-चुन्नी लाल ।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ है। इसके प्रथम चरण में जन्म होने से जातक पिता के लिये कष्टकारी होता है। अतः इसकी शान्ति अवश्य ही करनी चाहिए। यह कार्य जन्म के 27 दिन के अन्दर सम्पन्न हो जाना चाहिए। इसके लिए आपको इस नक्षत्र के कम से कम 28 हजार जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन के बाद जब पुनः यह नक्षत्र आये तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का विधि पूर्वक हवन कराना चाहिए। इस प्रकार शास्त्रीय विधि से उक्त नक्षत्र की शान्ति करने से अशुभ दोष कम हो जाता है तथा शुभ फलों की प्राप्ति होती है। जप अश्विनी नक्षत्र के मंत्र का करना चाहिए।

मंत्र - ऊँ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ऊँ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।।

अश्विनी प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आप श्रृंगार करने में या आभूषणों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित रहेंगे। जीवन में आपके सभी कार्य चतुराई एवं बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। सुन्दर एवं रूपवान होने के कारण सभी लोग आपसे आत्मीयता स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे। साथ ही आप भाग्यशाली भी होंगे।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

ज्ञान प्राप्त करने में बाल्यकाल से ही आपकी गहन रूचि रहेगी तथा लौकिक व्यवहार सभी के प्रति विनयशील रहेगा। आपका यश दूर-दूर तक फैलेगा। तथा जीवन का अधिकांश भाग सुखपूर्वक व्यतीत होगा। धन, ऐश्वर्य तथा मान सम्मान की आपके पास कभी भी कमी नहीं रहेगी।

अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

सत्य का पालन करना आपके जीवन का प्रमुख ध्येय होगा तथा सेवा भाव

स्वाभाविक रूप से आपके मन में विद्यमान रहेगा। सम्पूर्ण प्रकार की भौतिक सम्पतियों का स्वामित्व प्राप्त करने का सौभाग्य आपको प्राप्त होगा। साथ ही सुन्दर तथा सुशील पत्नी एवं सदगुणों से युक्त सुपुत्र आपकी गरिमा की सदैव अभिवृद्धि करेंगे।

सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत्।
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

सांसारिक कार्यो में व्यस्तता के कारण आप अपने शरीर या खानपान का ध्यान नहीं रख पायेगें फलस्वरूप देह की स्थूलता बढ सकती है। अपने ऐश्वर्य, वैभव एवं सदव्यवहार के कारण समाज में आप विशेष रूप से लोक प्रिय रहेंगे तथा सामान्य एवं विशिष्ट दोनों वर्गो का सहयोग प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः।।
जातक दीपिका

अर्थात अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूलकाय, धनवान तथा जनता का प्यारा होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीडित रहेंगे।

मेष राशि होने के कारण आप अल्प भोजन करने वाले होंगे। आप अपने माता-पिता की इकलौती सन्तान हो सकते हैं। यदि और भाई बहिन हुए तो आप निश्चित रूप से उनमें सर्वश्रेष्ठ होंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नेत्र लाली लिये हुए गोल होंगे। किसी आकस्मिक चोट या घाव के कारण आपके सिर में निशान होगा तथा सिर में बाल भी कम होंगे। आपके हाथ तथा पैर विशेष कान्ति से युक्त होंगे। जल से आप स्वभाव से ही भयभीत रहेंगे। साहस का आप में अभाव नहीं होगा तथा जीवन में विषम से विषम परिस्थितियों का सामना करने में आप सफल होंगे। समाज से आपको यथोचित सम्मान की प्राप्ति होगी। आप चंचल बुद्धि के होंगे तथा धन को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करेंगे, जिससे कभी-कभी आपको परेशानियों का सामना करना पडेगा। आपके पास मित्रों तथा सहयोगियों की बहुलता रहेगी। पुत्र भी पुत्रियों की अपेक्षा अधिक होंगे। स्त्री जाति आपकी विशेष रूप से कमजोरी रहेगी। लेकिन सभी से स्नेह करना आपके स्वभाव का अंग होगा। फलतः समाज के सभी वर्गो में यथोचित सम्मान अर्जित करने में आप सफल रहेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चत्रचलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरु र्व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप की प्रवृति शीघ्र ही प्रसन्न होने वाली होगी। इधर उधर परिभ्रमण करना आपको रूचिकर लगेगा। विशेषतः ऐसे स्थानों की सैर जहाँ के बारे में अन्य लोग आसानी से सोच भी नहीं सकते। आप के हाथ में शौर्य अथवा साहस प्रतीक चिन्ह चक्र पताका आदि हो सकते हैं। स्त्री वर्ग में आप विशेष प्रिय तथा सम्मान एवं आदर के पात्र समझे जाएंगे। आपके व्यक्तित्व की जो प्रमुख विशेषता होगी, वह यह कि सेवा या सहयोग का भाव आपके अर्न्तमन में हमेशा विद्यमान रहेगा चाहे आप कैसी भी विषम परिस्थितियों का सामना कर रहे हों।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरुः किये।।
बृहज्जातकम्

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व देना तथा स्त्रियों के प्रति अधिक आकर्षण रखना आपकी प्रवृति होगी तथा आपकी इस प्रवृति से आपके श्रेष्ठ या सम्माननीय संबंधी असन्तुष्ट होंगे। जिस के कारण आप उनसे या वे आप से अलग हो सकते हैं। चूँकि आपके अधिकांश कार्य स्त्री के कथनानुसार ही सम्पन्न होंगे। अतः आपसी वैमनस्य का यह भी एक प्रमुख कारण रहेगा। धन तथा पुत्र से आप हमेशा युक्त रहेंगे। आपको वैभव की कोई कमी नहीं होगी तथा समाज में अच्छा यश प्राप्त होगा। समयानुसार आप मांस, मदिरा इत्यादि अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण या सेवन भी कर सकते हैं।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

आपके स्वभाव में स्वाभाविक तेज परिलक्षित होगा। यह तेज कभी कभी क्रोध का रूप भी धारण करेगा जिससे समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। प्रकृति आपकी चंचल होगी अतः अवसर पड़ने पर आप मिथ्या भाषण से भी नहीं चूकेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरूग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः कियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाओं में भी आपकी रूचि रहेगी। सिर से आप गंजे भी हो सकते हैं। गर्म पदार्थों से परहेज रखें तथा दुर्घटनाओं से भी बचने का प्रयत्न करें तथा शरीर का पूर्ण रूप से सावधानी पूर्वक ध्यान रखें अन्यथा मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आपका जन्म देवगण में हुआ है। अतः आपकी वाणी मधुर तथा हमेशा सत्य बोलने वाली होगी। वाणी से आपके द्वारा कभी भी दूसरों को कष्ट नहीं पहुँचेगा। आप सब कुछ सादगी से ग्रहण करने की प्रतिभा से सम्पन्न होंगे। सात्विक तथा अल्प भोजन करना आपको रूचिकर लगेगा। महान लोगों तथा विद्वानों द्वारा वर्णित समस्त गुण आप में विद्यमान रहेंगे। धन, वैभव, ऐश्वर्य एवं भौतिक सम्पदा की आप के पास कमी नहीं होगी तथा इसका स्वामित्व आपको आजीवन प्राप्त होगा।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

देखने में आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होगा। दान देना आपकी स्वभाविक प्रवृति होगी तथा जरूरतमन्द लोग तथा संस्थाए आपकी हृदय से आभारी रहेंगे। आप सादगी पसन्द व्यक्ति होंगे। छल कपट तथा प्रपंच का नाम मात्र का भी आपके अन्दर समावेश नहीं होगा तथा विद्वान योग्य गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।

जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

अश्वयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति के होंगे तथा प्रत्येक कार्य को आप स्वतंत्रता पूर्वक सम्पन्न करना चाहेंगे। कोई भी बाहरी दबाब या सलाह आपको पसन्द नहीं आएगी। साथ ही आप अच्छे गुणों से युक्त रहेंगे। साहस तथा बहादुरी की आप में कमी नहीं होगी। जो भी कार्य करेंगे उसे साहस तथा बहादुरी के साथ पूर्ण करेंगे। समाज में आपका अच्छा प्रभुत्व रहेगा। सभी लोग दिल से आपका आदर करेंगे। आपका स्वर कभी-कभी थोडा घर्घराहट या खरखरापन लिए होगा। आपके अन्दर स्वामिभक्ति के पूर्ण गुण पाए जायेंगे अतः जिसके पास भी या जिसके लिए कार्य करेंगे ईमानदारी के साथ करेंगे आपसे किसी को कभी भी कोई शिकायत नहीं होगी।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा षष्ठी, एकादशी दोनों शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि में स्थित चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल अर्थात् बुरे फल देने वाले होंगे अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ नवगृहनिमार्ण जायदाद का क्रय विक्रय, लेन देन आदि महत्वपूर्ण कार्य न करें अन्यथा अशुभ फल होंगे। इसके अतिरिक्त मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याग दें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

जब आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक परेशानियों में वृद्धि हो रही हो या व्यापार में निरन्तर या अन्तर में नुकसान हो रहा हो या निकट भविष्य में किसी भी प्रकार की हानि की संभावना हो रही हो तो उस समय आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए। साथ ही सोना, ताम्र, गेहूँ, गुड़, लालवस्त्र, लालकनेर का फूल, घी इन पदार्थो का यथा शक्ति दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र का किसी योग्य आचार्य से कम से कम सात हजार जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव भी न्यून होगा।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।